om 6 delhi 1 A B C_Page 1 and 2 16/06/2015 17:40 Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-6 जून-II, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

बहुत ही सहज है राजयोग...

जहां में रहना आपको दूभर नहीं लगेगा, सब कुछ अच्छा लगने लगेगा, चेतना जागृत हो जायेगी और कुछ, और की तलाश आपको इस तरफ खींचेगी। जीवन सभी रसों से भर जायेगा, अंतर्द्वन्द्व शान्त हो जायेगा और आह्लादित चित्त में परमात्मा बस जायेगा! वह होगा केवल राजयोग से.....

उठो जागो, फिर न रुको, क्योंकि जागृति से ही अपनी उन्नति होती है। वैसे भी भोर की पहली किरण आपको वह सब कुछ दे जाती है, जो पूरे दिन आपको ढूंढ़ने के बाद भी नहीं मिलता। उस पहली किरण को लेने के लिए भी तो थोड़ा उठना पड़ेगा। बस हम आपको अपने मन के दायरे से थोड़ा सा बाहर निकालना चाहते हैं, जहां उस तम पर प्रकाश की एक किरण भी पड़े तो उजाला हो ही जायेगा।

क्या है असमंजस?

सभी को आज क्या चाहिए? अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाल जीवन। उसके लिए प्रयास यह है कि यह त्वरित साधन या सुविधा द्वारा ही संभव है। इसके लिए लोग वस्तु, ज्योतिष के साथ सुविधानुसार योग पद्धतियों को भी अपना रहे हैं जो क्षणिक रूप से सांतवना प्रदान करती हैं। लेकिन स्थायी सुख कौन दे सकता है, यह सोचनीय विषय है। परंतु समस्या यह है कि किस पर भरोसा किया जाए! विकल्प हैं भी? और संसार में फैली हुई योग पद्धतियां भी! इस भ्रमपूर्वक स्थिति से राजयोग निकाल सकता है।

सुख बौद्धिक या भावनात्मक?

कुछ लोग मानते हैं कि सुख बौद्धिक है। आज के समय में सुख को भौतिकता के साथ जोड़ा जाता है। अर्थात् बुद्धिमान वो है, जो चतुर है, सबसे काम निकलवा कर खुश हो जाता है। लेकिन भावनात्मकता हमारी मूल सम्पत्ति है। सुख शारीरिक न होकर मानसिक है। यदि आप होशियारी से सब कुछ जुटा भी लो, फिर भी मन उन बातों को लेकर बार-बार कोसता है, जो इसकी प्रकृति के बिल्कुल विरुद्ध है। इस सुख को केवल राजयोग ही दे सकता है। परन्तु सीखना तो पड़ेगा जीवन को चमत्कारिक बनाने के लिए!

राजयोग द्वारा पाएं सब कुछ!

राजयोग क्या है? इसको कैसे सीखें? इसके लाभ, आदि पर एक श्रृंखला हम ला रहे हैं, जिसे सहज रीति से आप अपना सकते हैं। वह सब कुछ मिलेगा जिसे आप इतनी मुश्किल से प्राप्त करते हैं। बस इस श्रृंखला को ध्यान से पढ़िये .....

प्रारंभ: जब भी आप किसी को अपना परिचय देते हैं, तो क्या कहते! कि, मेरा नाम, मेरे पिताजी का नाम, मेरा घर, मेरा स्थान यहाँ-यहाँ है। तो आप देखें कि आपने जो भी परिचय दिया वह `मेरा' का दिया, लेकिन आप (मेरा शरीर, मेरा घर, मेरा परिवार) मेरा नहीं हैं। आप इससे अलग `मैं' हैं, अर्थात् इसके मालिक, इससे अलग। उदाहरण के लिए मैं आत्मा हूँ, यह मेरा (शरीर, वस्तु, व्यक्ति व पदार्थ) है। मैं इसका प्रयोग करने वाली मालिक एक शक्ति हूँ, एक ऊर्जा हूँ, एक पावर हूँ, जिसे हम `आत्मा' कहते हैं, या रूह कहते हैं, या प्राण या जीव, मेटा फिज़िकल ऊर्जा भी कहते हैं। यही ऊर्जा आपसे कह रही है कि `आप आत्मा हैं, शरीर नहीं'। आपके मुख से बार-बार निकलता है कि मेरे सिर में दर्द, मेरे पैर में दर्द, मेरे मुख में दर्द, पर मैं पैर में दर्द नहीं। यह कौन कह रहा है, ``आत्मा''। वही जब शरीर से निकल जाती है तो उसे अर्थी कहते हैं। -क्रमशः

विकास के साथ सांस्कृतिक व आध्यात्मिक तरक्की भी ज़रूरी

'मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा स्वच्छ और श्रेष्ठ भारत का पुनर्निर्माण' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय उच्च माध्यमिक शिक्षकों के महासम्मेलन में शरीक हुए गुजरात के राज्यपाल ओ.पी. कोहली।

शांतिवन। शिक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित उच्च माध्यमिक शिक्षकों के अधिवेशन के दौरान राज्यपाल ओम प्रकाश कोहली को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय व राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी।

शांतिवन। आज हम दो राहे पर खड़े हैं। एक तरफ भौतिक और आर्थिक तरक्की है, तो दूसरी ओर सामाजिक,सांस्कृतिक व आध्यात्मिक विकास। कई बार ऐसा लगता है कि कहीं हम भौतिक तथा आर्थिक तरक्की में सांस्कृतिक व आध्यात्मिक तरक्की भूल न जाएं। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन परिसर में उच्च माध्यमिक शिक्षकों के अधिवेशन में जुटे देशभर के हज़ारों शिक्षाविदों को सम्बोधित करते हुए गुजरात के राज्यपाल ओम प्रकाश कोहली ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि सिर्फ रोज़गार दिलाना ही शिक्षा का स्तर नहीं होना चाहिए, बल्कि वो ऐसे लोगों का सृजन करे जो सामाजिक दायित्व को पूर्ण करें। केवल शब्द का ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा का मकसद नहीं होना चाहिए। इस मौके पर संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि संस्थान का प्रयास एक ऐसा समाज बनाना है जिसमें प्रत्येक मनुष्य के अंदर श्रेष्ठ और सुंदर गुणों की पराकाष्ठा हो।

गुजरात हवाई पट्टी पर राज्यपाल का किया स्वागत

गुजरात हवाई पट्टी पर राज्यपाल कोहली के मानपुर हवाई पट्टी पर पहुंचने पर कलेक्टर वी. सरवन कुमार, एस.पी. डॉ. समीर सिंह व एस.पी. निर्मला विश्नोई ने उनकी अगवानी की। इस दौरान पुलिस के सशस्त्र जवानों ने राज्यपाल को गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

इस अवसर पर शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय, मूल्य आधारित शिक्षा पाठ्यक्रम के निदेशक डॉ. पांड्यामणि, गुजरात ज़ोन की निदेशिका ब्र.कु. सरला, प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक हरीश शुक्ला व गांधीनगर सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. कैलाश समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का आरंभ मधुरवाणी के सुंदर गीत द्वारा हुआ।

शांतिवन। वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय व ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा संयुक्त रूप से चलाए जा रहे रहे पी.जी. डिप्लोमा व सर्टिफिकेट कोर्सेज़ के प्रथम दीक्षांत समारोह में डिग्री प्रदान करते हुए बायें से शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी व वी.एम.ओ.यू. की रिजनल को-ऑर्डिनेटर डॉ. रश्मि बोहरा।